POLITICAL SCIENCE Dep.
B.A-I (Hons.), Paper-I

Dr. HUSNA ARA
Asst. Professor
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur,
Samastipur

बहुलवाद पर हैरोल्ड लास्की के विचार

हैरोल्ड लास्की बीसवीं सदी के प्रमुख ब्रिटिश विचारक एवं चिन्तक हैं। उन्होंने राज्य को समाज के अन्य समूहों के समान एक समूह माना है। वह राज्य को सर्वोपरि समूह नहीं मानते। लास्की के अनुसार प्रत्येक शासक को अपने देश की प्रथाओं, परम्पराओं, धार्मिक नियमों और लोकमत का सम्मान करना होता है। इसलिए कोई भी शासन बिल्कुल निरंकुश नहीं हो सकता।

लास्की नैतिक आधार पर भी सम्प्रभुता के एकत्ववादी सिद्धांत का विरोध करते हैं उनके अनुसार व्यक्ति का सर्वोच्च नैतिक कर्तव्य अपने व्यक्तित्व का विकास करना है लेकिन सम्प्रभुता की परंपरागत धारणा राज्य को परम साध्य और व्यक्ति को साधन बना देती है। यह स्थिति व्यक्तित्व के विकास में निश्चित रूप से बाधक है। वह कहते हैं कि राज्य व्यक्ति की प्रगति और आत्मतुष्टि का साधनमात्र है।

लास्की कानून विषयक धारणा के आधार पर भी सम्प्रभुता सिद्धांत की आलोचना करते हैं। उनका मत है कि कानून सम्प्रभुता की आज्ञामात्र नहीं है वरन् वह परंपराओं, रीति-रिवाजों, धर्म आदि के द्वारा निर्मित है।

Scanned with CamScanner